BAG Philosophy Assignment

(सत्र- जनवरी 2021)

भारतीय दर्शन

बीपीवाईसी-131 (BPYC-131)

पूर्णांक 100

टिप्पणी: 1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

2) सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

3) प्रश्न क्रमांक 1 एवं 2 के उत्तर लगभग 400-400 शब्दों में लिखिए।

1. भारतीय दर्शन परम्परा के नास्तिक-आस्तिक विभाजन/वर्गीकरण पर निम्नलिखित बिन्दुओं की सहायता से चर्चा कीजिए- 20

अ) नास्तिक-आस्तिक विभाजन की सम्भावना,

आ) नास्तिक-आस्तिक विभाजन की सीमा,

इ) भारतीय दर्शनों के इस वर्गीकरण के विरुद्ध आपत्तियां।

अथवा

न्याय दर्शन अनुमान को प्रमाण (प्रमा के साधन) के रूप में किस तरह स्थापित करता है? और, चार्वाक दर्शन न्याय दर्शन के अनुमान सम्बन्धी मत का किस तरह खण्डन करता है? 10+10= 20

2. सांख्य दर्शन सत्कार्यवाद के सिद्धान्त की स्थापना के लिए क्या युक्तियां प्रस्तुत करता है? सांख्य द्वारा प्रस्तुत युक्तियों की परीक्षा कीजिए। 10+10= 20

अथवा

निम्नलिखित में से **प्रत्येक** पर **200-200 शब्दों** में टिप्पणी कीजिए। 10+10= 20

अ) आलय विज्ञान का मत एवं शंकर द्वारा इस मत का खण्डन

आ) शैव दर्शन में 'ईश्वर की प्रकृति'

3. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर **200-200 शब्दों** में लिखिए। 2*10= 20

अ) न्याय एवं सांख्य दर्शन के मोक्ष-सम्बन्धी मत के अन्तरों को रेखांकित कीजिए। 10

आ) 'जैन मत के नीति दर्शन' के दार्शनिक निहितार्थों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। 10

इ) नागार्जुन के माध्यमिक दर्शन में शून्यता का की अवधारणा की व्याख्या कीजिए? 10

ई) वैशेषिक दर्शन में अभाव के सभी प्रकारों पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए। 10

4. निम्नलिखित में से **किन्हीं चार** प्रश्नों के उत्तर लगभग **150-150 शब्दों** में लिखिए। 4*5= 20

अ) योग दर्शन द्वारा ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए प्रस्तुत युक्तियों को लिखिए। 5

आ) विपरीतख्याति एवं अन्यथाख्याति के मध्य अन्तर को बताइए? 5

इ) मुण्डक उपनिषद् 'ब्रह्म जगत् का कारण है', अपने इस मत को किस तरह न्यायसंगत बनाता है? 5

ई) भारतीय दर्शन परम्परा में स्मृति ग्रन्थों के महत्व पर प्रकाश डालिए। 5

उ) शंकर के अनुसार मोक्ष क्या है? 5

ऊ) रामानुज द्रव्य को किस तरह परिभाषित करते हैं? 5

5. निम्नलिखित में से **किन्हीं पांच** पर लगभग **100-100 शब्दों** में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। 5*4= 20

अ) अपौरुषेय 4

आ) पुरुषार्थ 4

इ) भूमा विद्या 4

ई) अध्यास 4

उ) सामान्यलक्षण प्रत्यक्ष 4

ऊ) अर्थापत्ति 4

ए) सम्प्रज्ञात् समाधि 4

ऐ) केवलप्रमाण 4